इस पुस्तक में प्रकाशित छायाचित्र नेहरू मेमोरियल म्यूजियम और लाईब्रेरी तथा पत्र सूचना कार्यालय नयी दिल्ली के सौजन्य से हैं।

ISBN 81-237-1204-9

पहला संस्करण : 1995

दूसरी आवृत्ति : 1999 (*शक* 1920)



Baat Jawahar Lal Ki *(Hindi)*

**रु . 8.00**

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5 ग्रीन पार्क
नयी दिल्ली-110016 द्वारा प्रकाशित

नवसाक्षर साहित्यमाला

# बात जवाहर लाल की

देस राज गोयल

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

# अनुक्रम

# 1

# सबसे पहली बात

जवाहर लाल नेहरू का बड़ा नाम है। अपने देश में भी, दूसरे देशों में भी। भारत ही नहीं, सारा संसार उनको आदर से याद करता है। बहुत कम लोगों को जनता का इतना प्यार मिला।

ऐसा क्यों है ? क्या बात है जिसने उनको सब का प्यारा बना दिया है ? बहुत सी बातें याद की जाती हैं । जवाहर लाल आजादी की लड़ाई में आगे-आगे थे। आजादी मिलने पर वे प्रधानमंत्री बने। लगभग अठारह वर्ष प्रधानमंत्री रहे। देश-विदेश में घूमें। बड़े-बड़े लोगों से मिले। बहुत कुछ सीखा। बहुत कुछ सिखाया।

जवाहर लाल की सोच में एक खास बात थी। उनको आम लोगों पर बहुत भरोसा था। यह बात उन्होंने गांधी जी से सीखी थी। वह गांधी जी को अपना गुरु मानते थे।

गांधी जी ने आजादी की लड़ाई बिना तलवार के लड़ी। गांधी जी का मार्ग अहिंसा का था। अहिंसा के मार्ग पर दूसरों के दिल को जीतना पड़ता है। डरा कर दिल नहीं जीता जा सकता। प्रेम से जीता जा सकता है। सेवा से जीता

जा सकता है । समझा-बुझा कर जीता जा सकता है ।

लोगों में एकता भी समझाने और सेवा करने से पैदा हो सकती है । यह सब कुछ गांधी जी ने करके दिखाया था । उनके प्रेम और सेवा का बहुत असर होता था । लोग उनकी बात को सुनते थे । वह जो समझाते उसको समझते थे । इसीलिए उनको बापू कहते हैं । बापू घर के बड़े को कहते हैं । गांधी जी को भारत के लोग घर का बड़ा मानते थे । आज तक हम उनको राष्ट्रपति कहते हैं ।

गांधी जी की बातें जवाहर लाल के दिल को लगीं । उन्होंने उनका मार्ग अपना लिया । जवाहर लोगों की सेवा में जुट गए । लोगों की सेवा को वह देश की सेवा मानने लगे । उनके बीच जाकर उनके दुख को समझने लगे । सेवा ही उनकी राजनीति बनी ।

सेवा के लिए उन्होंने त्याग भी किया । पिता के दिए सुख-साधन छोड़ दिए । आम लोगों की तरह मोटे कपड़े पहनने लगे । सूट-बूट उतार कर कुर्ता-धोती पहनने लगे । लोग भी जवाहर लाल को अपने में से एक मानने लगे । सभी उनको — "भाई" कहकर पुकारते थे ।

लोगों का यह प्रेम ही जवाहर लाल की सबसे बड़ी ताकत थी । और लोगों से प्रेम करना जवाहर लाल का धर्म बन गया । सब का भला कैसे हो ? यह जवाहर लाल सोचते । इसीलिए वह सब के प्यारे हो गए ।

नेहरू जी ने गांधी जी की राह अपनाई ।

जवाहर लाल लोगों पर भरोसा रखकर बड़े बने । उनको लोगों का प्रेम मिला क्योंकि वह लोगों से प्रेम करते थे । जवाहर लाल और भारत के बीच प्रेम का और भरोसे का अटूट नाता बन गया । यह सबसे पहली बात है जो जवाहर लाल सिखाते हैं । "जनता से प्यार करो तो जनता आपसे प्यार करेगी । लोगों पर भरोसा करो तो वह आप पर भरोसा करेंगे ।"

# 2

# भारत माता की जय

"भारत माता की जय !"

"भारत माता की जय !"

लोग नारा लगा रहे थे ।

गांव के सभी लोग चौपाल में आ गए थे । लगभग भी किसान थे । सभा होने वाली थी । जवाहर लाल सभा में बोलने के लिए आए हुए थे । उनके स्वागत में नारे लग रहे थे । सारा गांव गूंज रहा था । जवाहर लाल बहुत खुश थे ।

जवाहर लाल भाषण करने के लिए खड़े हुए । बोले, "आप लोग अभी 'भारत माता की जय' बोल रहे थे । जानते हो भारत माता किसे कहते हैं ? भारत माता कौन है ? आप लोग किस की जय चाहते हैं ?"

लोग एक दूसरे की ओर देखने लगे । वे हैरान थे कि क्या कहें । अनोखा सवाल था । कुछ अटपटा भी लगता था ।

इतने में भीड़ में से एक किसान उठा । वह बोला, "भारत माता धरती को कहते हैं । हम इसकी कोख में उपजा अनाज

खाते हैं। यह हमें पालती है। इसलिए हम इसे माता कहते हैं। इसकी जय मांगते हैं।"

इस पर जवाहर लाल जी ने पूछा, "कौन सी धरती ? वह खेत जो तुम जोतते हो ? या वह धरती जिस पर गांव बसा है ? या सारे देश की धरती ?"

बात कुछ गहरी हो चली। सवाल का जवाब ढूंढ़ना कठिन लगने लगा। अटकलें बंद हो गई। लोग जवाहर लाल जी की ओर देखने लगे। वह जानते थे कि नेहरू जी जवाब बतायेंगे।

जवाहर लाल जी ने कहा कि किसान का जवाब गलत नहीं है। लेकिन अधूरा है। भारत मां धरती माता जरूर है। धरती हमें अन्न देती है, जल देती है। उससे हम प्यार करते हैं। करना भी चाहिए। इसके पहाड़ कितने सुंदर हैं। नदियों की कल-कल कैसी सुहावनी है। यहां फसलें झूमती हैं तो हम नाचते हैं।

भारत माता यह तो है ही। लेकिन इससे भी बड़ी है। यह धरती और इस पर रहने वाले सब लोग उसके अंग हैं। भारत और भारतवासी अलग नहीं। जब हम भारत माता की जय मांगते हैं, तो सबकी जय मांगते हैं। भारत आजाद होगा तो सब भारतवासी आजाद होंगे। भारतवासियों का भला होगा तो भारत का भला होगा।

ज़वाहर लाल जी यह बात सबको समझाते थे। आजादी

धरती और उस पर बसने वाले सभी एक हैं।

से पहले भी आजादी के बाद भी। केवल भारत में ही ऐसा नहीं कहते थे। दूसरे देशों में भी ऐसा ही कहते थे। सब देशों को यही समझाते थे। उनकी शिक्षा थी कि धरती और उस पर बसने वालों को एक ही समझना चाहिए। दोनों को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता।

# 3

# 26 जनवरी

26 जनवरी का दिन एक पर्व का दिन है। भारत का बड़ा त्यौहार है। हर वर्ष यह दिन धूम-धाम से मनाया जाता है। जगह-जगह जुलूस निकाले जाते हैं। सेना की परेड होती है। पुलिस की टुकड़ियां भी परेड में शामिल होती हैं।

दिल्ली की परेड में लोग देश भर से आते हैं। हर प्रदेश के लोग अपने जीवन की झांकी दिखाते हैं। बच्चे गाने गाते हैं। नाचते हैं। लोग दूर-दूर से परेड देखने आते हैं। परेड में भारत के रंगारंग जीवन का चित्र दिखाई देता हैं। 26 जनवरी की परेड देखना भारत दर्शन के समान है।

हर प्रदेश की राजधानी में भी ऐसी परेड होती है। दिल्ली की परेड में भारत के राष्ट्रपति सलामी लेते हैं। प्रदेशों में वहां के बड़े नेता सलामी लेते हैं। उस परेड में सेना नहीं होती। केवल पुलिस होती है।

26 जनवरी का दिन जवाहर लाल से जुड़ा हुआ है। आजादी की लड़ाई की कहानी में इसकी खास जगह है।

बात सन् 1929 की है। जवाहर लाल पहली बार कांग्रेस
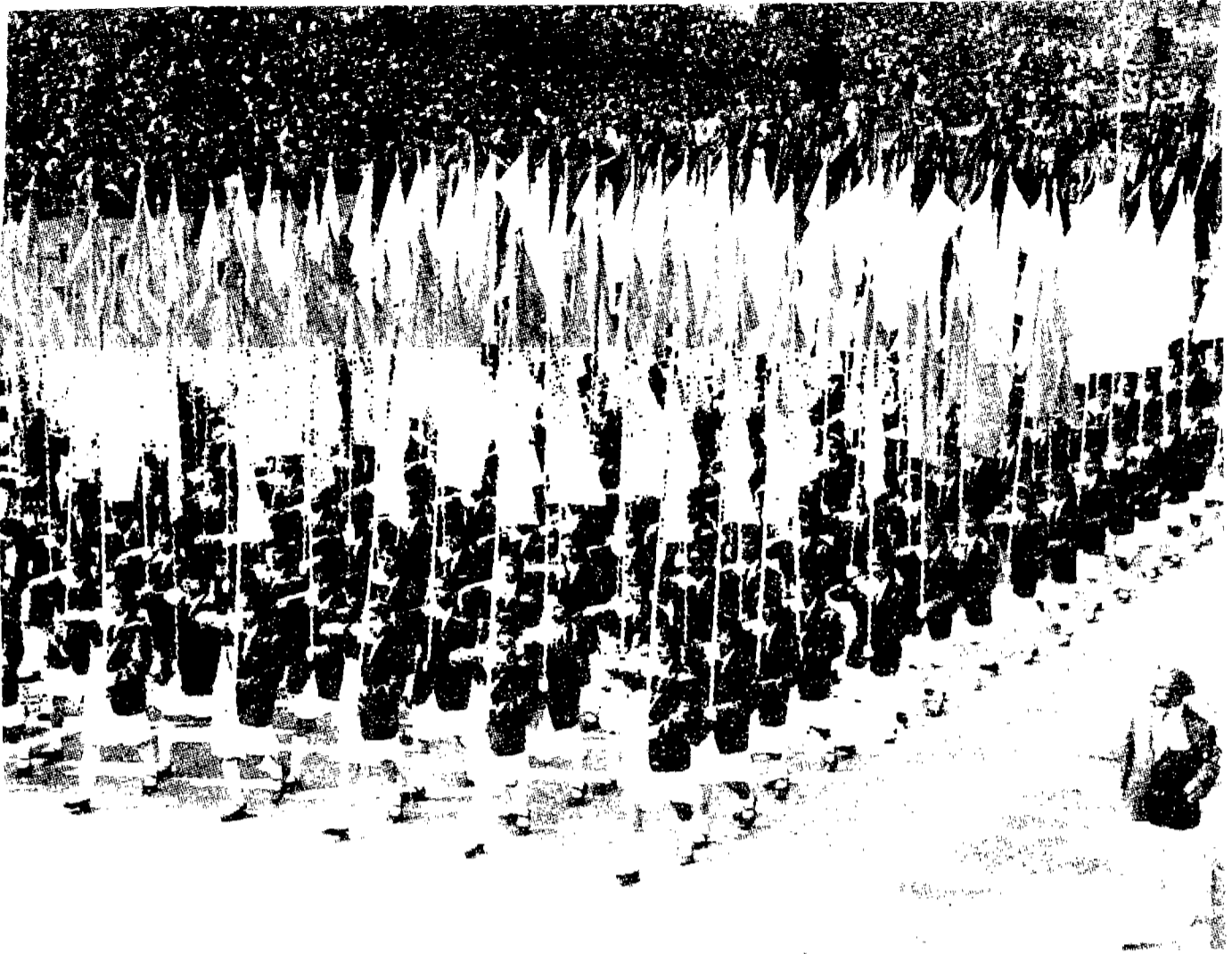
गणतंत्र दिवस की परेड

के प्रधान बने थे । कांग्रेस आजादी की लड़ाई में सबसे आगे थी । जवाहर लाल ने कहा भारत पर दूसरों का राज नहीं होना चाहिए । भारत पर भारत के ही लोगों का शासन होना चाहिए । किसी काम में विदेशी दखल नहीं होना चाहिए । इसको वह पूरी आजादी या पूर्ण स्वराज कहते थे ।

देशवासी इस ओर सोचें, इसके लिए एक उपाय निकाला गया । 26 जनवरी को सारा देश शपथ ले कि हम पूर्ण स्वराज चाहते हैं । देश के कोने-कोने में ऐसी शपथ ली गई । इससे लोगों में एक नया जोश पैदा हुआ । आजादी पाने की उमंग उभरी । भारतवासियों ने आजादी पाने की ओर एक बड़ा कदम बढ़ाया ।

वह शपथ क्या थी ? उसमें कहा गया था कि भारत को आजादी पाने का पूरा हक है । विदेशियों को भारत पर राज करने का कोई हक नहीं । भारतवासी अपना हक पाने के लिए संघर्ष करेंगे । इसके लिए अपना तन, मन लगा देंगे ।

"भारतवासी काम करते हैं । पसीना बहाते हैं । मेहनत करके धन-दौलत पैदा करते हैं । इस मेहनत का फल भारत के लोगों को नहीं मिलता । इसका बड़ा भाग विदेशी लोग ले जाते हैं । गुलामी से गरीबी पैदा होती है । देश पिछड़ा रहता है । इस हालत को बदलने के लिए आजादी पाना जरूरी है ।"

यह शपथ हर वर्ष 26 जनवरी को दुहराई जाती थी । यह जवाहर लाल की सोच थी । देश को जगाने का उनका तरीका था ।

आजादी आने के बाद शासन का नया ढांचा बनाया गया । उसको भारत का संविधान कहते हैं । उस ढांचे का नाता भी 26 जनवरी के साथ जोड़ दिया गया । सन् 1950 की 26 जनवरी को भारत का संविधान लागू किया । संविधान भारत को पूर्ण स्वतंत्र देश मानता है । आजादी से पहले ली गई शपथ पूरी हुई । पूर्ण स्वराज का जो रूप सोचा गया था वह सामने आया । सपना सच हुआ । भारत का राज भारतवासियों के हाथ में आया । शासन या राजतंत्र लोगों का यानी जन गण का हो गया । भारत गणतंत्र बना । इसलिए 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस कहते हैं ।

## 4

# स्वराज का अर्थ

भारत आजाद हो चुका था। स्वराज आ चुका था। जवाहर लाल नेहरू प्रधानमंत्री बन गए थे। इलाहाबाद छोड़ कर दिल्ली में रहने लगे थे। उन दिनों एक किसान उनकी कोठी पर आया।

वह किसान उनको आजादी से पहले मिला था। तब जवाहर लाल प्रधानमंत्री नहीं थे। केवल कांग्रेस के नेता थे। गांव गांव घूमते थे। लोगों को अपना हक मांगने के लिए जगाते थे। समझाते थे कि स्वराज क्या है? स्वराज पाने के लिए सब को कुछ करना चाहिए। स्वराज सब के लिए होगा। उसमें सब भागीदार होंगे।

उस किसान ने जवाहर लाल जी की बातें सुनी थीं। जवाहर लाल उसको पहचानते थे। उसको देखकर बड़े खुश हुए। उससे गले मिले। हाथ मिलाया और चलने लगे। चलने लगे तो किसान मित्र ने उनका हाथ पकड़ लिया।

जवाहर लाल रुक गए। पूछा, "कहो क्या बात है?"

वह किसान कहने लगा, "भाई, तुम कहा करते थे स्वराज

में सब भागीदार होंगे। अब स्वराज आ गया। भारत आजाद हो गया। तुम प्रधानमंत्री बन गए। मुझे क्या मिला ?"

जवाहर लाल इस सवाल से बिगड़े नहीं। खुश हुए। उस किसान को समझाया — "तुमने ठीक सवाल किया। औरों को भी यह सवाल करने का हक है। आजादी या स्वराज यही है। कोई भी प्रधानमंत्री से यह सवाल कर सकता है। हर भारतवासी पूछ सकता है कि उसे क्या मिला। लोग प्रधानमंत्री बनाते हैं। प्रधानमंत्री वह बनता है जिस पर सब लोगों का भरोसा हो। जब वह भरोसा खो दे तो प्रधानमंत्री नहीं रह सकता।"

आजादी वह है, जिसे लोग चलायें।
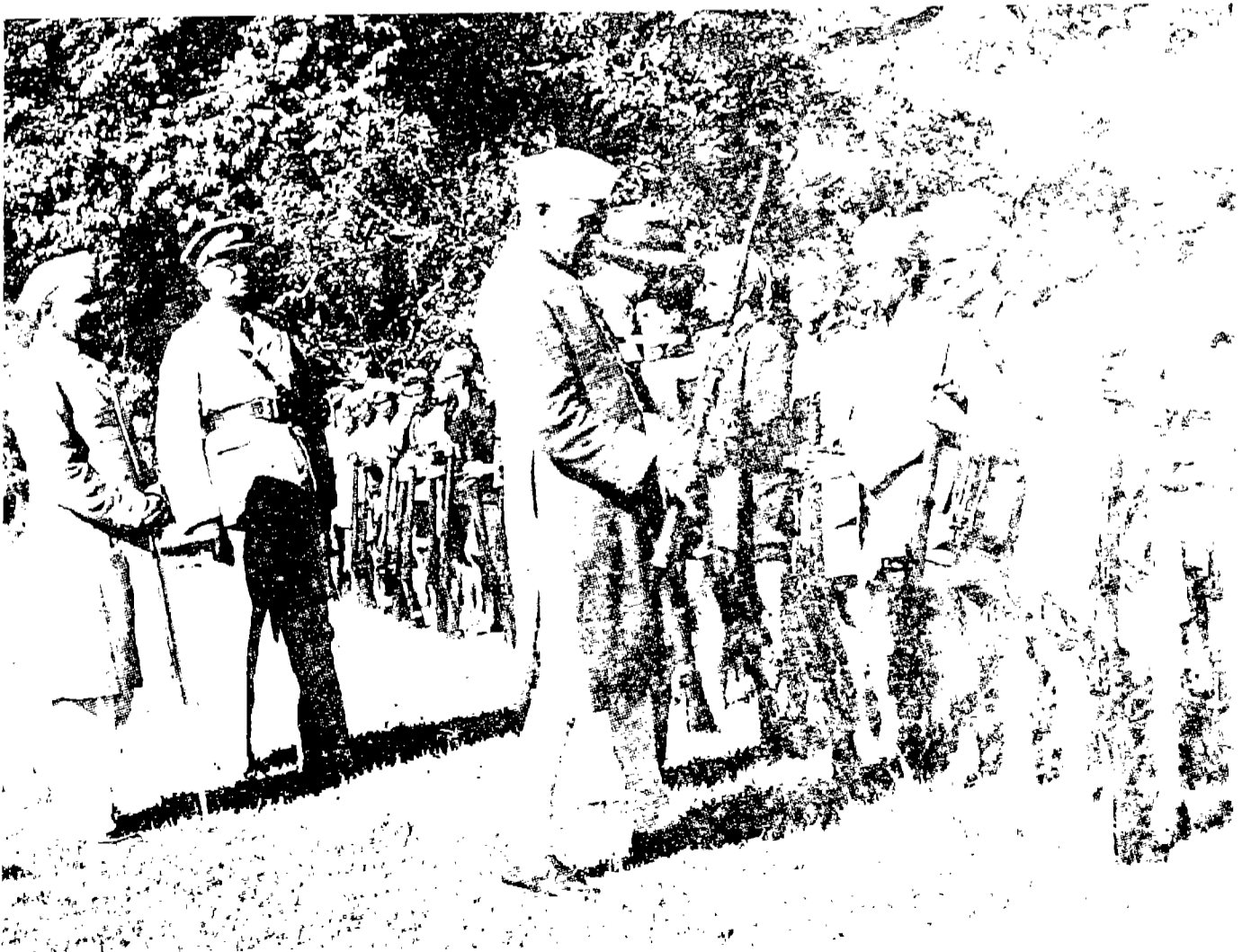
जवाहर लाल स्वराज को लोगों का राज मानते थे । ऐसा राज जो लोगों के भरोसे पर चले । सरकार ऐसी हो जो लोगों के सवालों का जवाब दे ।

ऐसा राज आजादी के बाद ही बना । उससे पहले कभी ऐसा राज नहीं था । एक समय था जब राजा महाराजा राज करते थे । राजा उन्हें जनता नहीं बनाती थी । आम लोग नहीं चुनते थे । वह राजा राज करना अपना हक समझते थे । राजा इसलिए बनते थे कि वह राजा के घर पैदा हुए थे । या फिर इसलिए कि उन्होंने अपने बल से राज जीता था ।

विदेशी लोगों ने बल से भारत का राज लिया था । वह आम लोगों के या जनता के भरोसे राज नहीं करते थे । अपने बल पर भरोसा करते थे । वह किसी को सवाल करने का हक नहीं देते थे ।

जवाहर लाल को ऐसा राज पसंद नहीं था । उनके साथी भी ऐसा राज नहीं चाहते थे । वे धन या बल के भरोसे चलने वाले राज को स्वराज नहीं मानते थे । आजादी या स्वराज वह है जिसे लोग चलाएं ।

विदेशी राज की जगह भारतवासी राजा बन गए । यह अर्थ नहीं था आजादी का । जवाहर लाल कहा करते थे, "किसी गोरे की जगह काला आ बैठे तो आजादी नहीं आ जाएगी । आज़ादी तब होगी जब हर भारतवासी सरकार से जवाब तलब कर सके ।"

इसीलिए आजादी के बाद शासन का नया तरीका निकाला गया। लोगों को सरकार बनाने और बदलने का हक दिया गया। 1952 में सारे देश में चुनाव हुआ।

लोगों ने ऐसे लोगों को चुना जिन पर उनका भरोसा था। वह उनके प्रतिनिधि थे। उन लोगों ने अपनी राय से प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री चुने।

चुनाव हर पांच वर्ष के बाद होते हैं। कभी कभी जल्दी भी हो जाते हैं। जो लोग ठीक काम नहीं करते चुनाव में हार जाते हैं। उनकी जगह दूसरे आते हैं। ऐसे लोग प्रतिनिधि बनते हैं जिन पर जनता को अधिक भरोसा हो। इस तरह लोग शासन बनाने में भागीदार बनते हैं। राज लोगों का राज कहलाता है। इसी को जनतंत्र या गणतंत्र कहते हैं।

## 5
## ताकत जनता के हाथ

लोकतंत्र में शासन वह करता है जिसको लोग चाहें। पुराने जमाने में शासक लोगों की राय से शासन नहीं करते थे। राजा या शासक भगवान का रूप माने जाते थे। उनको लोग नहीं भगवान शासक बनाता था। ऐसा माना जाता था। जवाहर लाल ऐसा नहीं मानते थे।

आजाद भारत का शासन कैसा हो ? जवाहर लाल कहते थे जैसा लोग चाहें । आजादी आने के बाद शासन का ढांचा या संविधान बनाने की बात आई । इसके लिए एक सभा बनाई गई । उस सभा में लोगों के चुने हुए प्रतिनिधि थे । इन सभा को संविधान सभा कहा गया । जो ढांचा बनाया गया उसमें लोगों को शासक चुनने का हक दिया गया । जिन लोगों को जनता चुनेगी वही शासन चलाएंगे । वही कानून बनाएंगे ।

ऐसा भी नहीं कि जो एक बार चुना गया वह सदा शासक बना रहेगा । हर पांच साल के बाद चुनाव होना तय हुआ । चुनाव में 21 वर्ष या उससे ऊपर की आयु वाले हर भारतवासी को चुनाव में राय देने का हक मिल गया । अब यह हक 18 वर्ष का होने पर मिल जाता है । कोई शर्त नहीं । वह धनी हो या गरीब, पढ़ा-लिखा हो या अनपढ़, सब की राय का दाम बराबर है ।

दुनिया में ऐसा पहली बार हुआ । इससे पहले कभी ऐसा नहीं हुआ कि आजादी आते ही सब को शासक चुनने का हक मिल जाय । ऐसा भी नहीं हुआ था कि सब को बराबर हक मिले । कई देशों में महिलाओं को राय देने का हक नहीं था । चुनाव के हक पर शर्तें थीं । या तो इतना पढ़ा लिखा हो । या इतना धनवान हो । दूसरे देशों में महिलाओं को यह हक पाने के लिए लड़ाईयां लड़नी पड़ीं । अनपढ़ किसानों

को और मजदूरों को भी यह हक देर से मिला।

जवाहर लाल ने समझाया कि यह ठीक नहीं। गरीब और अनपढ़ लोग भी अपना भला बुरा समझ सकते हैं। उनकी सोच पर भरोसा न करना गलत है। यदि वह आजादी की लड़ाई लड़ सकते हैं तो शासन बना और चला भी सकते हैं।

अकेला आदमी गलती कर सकता है। सब मिलकर गलती नहीं करते। यदि गलती करें भी तो सुधार सकते हैं। अकेले की गलती को सुधारना कठिन होता है। वह गलती मानना अपमान समझता है। जब गलती मानी ही न जाए तो सुधरे कैसे?

इसीलिए जवाहर लाल सब की राय लेने पर जोर देते थे। किसी एक पर शासन छोड़ना ठीक नहीं समझते थे। अकेले के शासन में शासक की भी हानि होती है और लोगों की भी। वह बे-लगाम घोड़े की तरह चलता है। अपने आप भी ठोकर खाता है। दूसरों को भी चोट पहुंचाता है।

चुनाव शासकों पर लगाम का काम करता है। जिसे शासक बनना हो चुनाव के समय लोगों के पास जाता है। अकेला जाता है या दल बनाकर जाता है। उनको बताता है कि वह क्या करेगा। जो शासक रहा हो वह अपने काम का लेखा-जोखा देता है। जिसकी बातें लोगों को अधिक पसंद आती हैं उनको चुन लिया जाता है। चुनाव के कारण शासक

चौकस रहते हैं । गलती करते हैं तो अगले चुनाव में हार जाते हैं । चुनाव पांच वर्ष में कम से कम एक बार होता है ।

हर शासन चुनाव से बनता है । सारे देश का, हर प्रदेश का । नगरों और उपनगरों के शासन के लिए भी चुनाव होते हैं । सारे देश का शासन चलाने वाली सभा को लोक सभा कहते हैं । प्रदेशों की सभाओं को विधान सभा कहते हैं । नगर का शासन चलाने वाली सभा को नगर पालिका कहा जाता है । कहीं-कहीं यह नगर निगम भी कहलाती है । इस तरह सारी ताकत लोगों के हाथ में है । वह अपने चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा शासन का काम चलाते हैं ।

जवाहर लाल इस ताकत का बहुत आदर करते थे । वह लोक सभा के काम को बहुत ऊंचा दर्जा देते थे । वे लोक सभा में सदा हाजिर रहते थे । इसके काम में गड़बड़ी पसंद नहीं करते थे ।

एक बार लोक सभा में बहुत गड़बड़ी हुई । एक सवाल पर विरोधी दल भड़क उठे । बहुत शोर-गुल मचाया । उसके बाद वे लोग सभा से उठकर चले गए ।

जवाहर लाल इससे बहुत दुखी हुए । उन्होंने विरोधी दल के नेता को पत्र लिखा । अपना दुख बताया । यह भी लिखा कि यदि चुने हुए लोग ऐसा करेंगे तो शासन कैसे चलेगा ? चुनने वाले क्या सोचेंगे ?
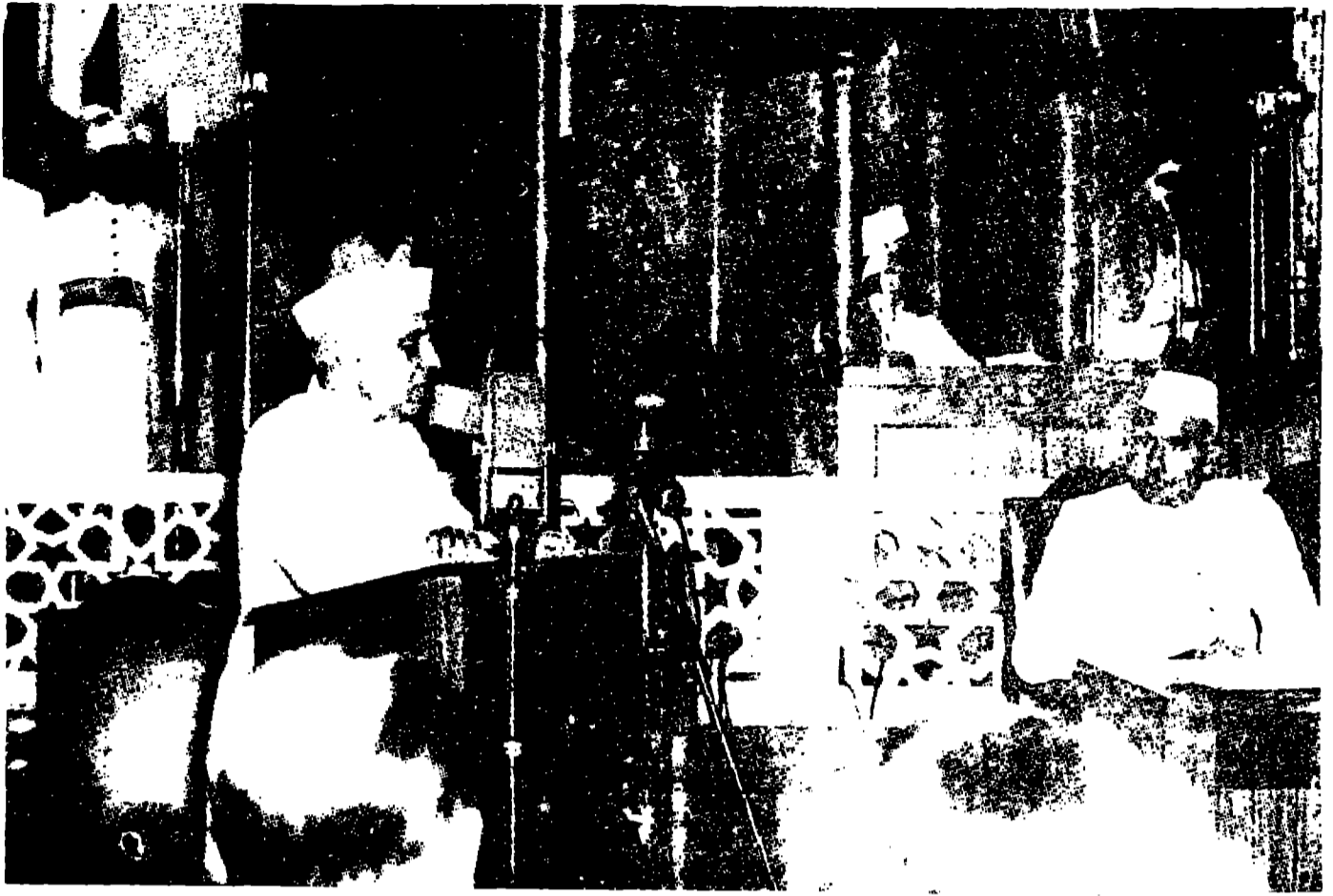
नेहरू जी लोकसभा में।

विरोधी दल वालों को भी समझ में आया। उन्होंने भरोसा दिलाया कि फिर ऐसा नहीं करेंगे।

ऐसा आदर था उनके मन में चुनने वालों का।

# 6
# प्रधानमंत्री जवाहर लाल

जवाहर लाल नेहरू भारत के पहले प्रधानमंत्री थे । सारे देश के लोग उन से प्यार करते थे । दूसरे देशों में भी उनका बड़ा आदर था । प्रधानमंत्री बनकर जवाहर लाल ने नए भारत की रचना शुरू की । आज के भारत को बनाने में उनका सबसे बड़ा हाथ था । इसमें वह बहुत सफल हुए । भारत का लोकतंत्र सफल हुआ । जनता में अपने ऊपर भरोसा करने की शक्ति आई । भारत के लोग आगे बढ़े हैं । भारत दूसरे देशों के लिए आदर्श बन गया है ।

आजाद देश का प्रधानमंत्री कैसा हो ? लोकतंत्र में प्रधानमंत्री कैसे काम करे ? इस की मिसाल, आदर्श बन गए जवाहर लाल ।

जवाहर लाल कैसे काम करते थे ? इस का जवाब उन के एक पत्र में मिलता है । यह पत्र उन्होंने राज्यों के मुख्य मंत्रियों को लिखा था । पत्र में काम करने के तरीकों के सुझाव थे । उन सुझावों पर वह खुद भी अमल करते थे ।

पत्र में सबसे पहली बात थी मिलजुल कर काम करने

नेहरू जी चाहते थे कि उनके मंत्री एकजुट होकर काम करें ।

की। राज्य में बहुत से मंत्री होते हैं। उनकी राय अलग-अलग हो सकती है । उन सब को एक जुट रखना मुख्यमंत्री का काम है । वह उनको एक टीम की तरह जोड़ कर रखें । उन की बात सुने और समझे । अपनी बात सुनाए और समझाएं ।

दूसरी बात, पहली से जुड़ी हुई है । मंत्रियों में काम बांट देना चाहिए । हर मंत्री का अलग काम हो । इस काम के करने में उन की राय मानी जाय । वह दूसरे साथियों से राय ले सकता है । लेकिन अंत में वही होगा जो वह चाहेगा । मुख्यमंत्री सब की राय को ध्यान में रख कर चले ।

तीसरी बात थी काम करने वालों को तैयार करने की । दूसरे मंत्री मुख्यमंत्री को सहयोग देते हैं । उस से सहायता

लेते भी हैं। हर मंत्री अच्छा हो तो सारा काम अच्छा चलता है। इसलिए मुख्यमंत्री उनको कुशल बनाने की कोशिश करे।

चौथी बात थी जनता से नाता जोड़ने की। सरकार की बड़ी ताक़त जनता है। उस का भरोसा बनाए रखना जरूरी है। इसके लिए अपने दल को, पार्टी को, साथ लेना चाहिए। दल के लोग जनता के बीच रहते हैं। वह जनता की बात सरकार तक पहुंचा सकते हैं। वही सरकार की बात जनता को समझा सकते हैं।

दल के लोग सरकार और जनता के बीच ताल मेल बना सकते हैं। मंत्री सरकारी कामों में उलझे रहते हैं। जनता से कम मिल पाते हैं। दल के लोग हर समय जनता के बीच रहते हैं। अच्छी बुरी सब बातें सुनते हैं।

इस तरह काम करने से मुख्यमंत्री सफल रहता है। काम अच्छा चलता है। उसके साथ मंत्री उसका आदर करते हैं। विधानसभा में उस की बात गौर से सुनी जाती है। जनता उसकी बात सुनती और मानती है।

जवाहर लाल खुद इन नियमों का पालन करते थे। साथी मंत्रियों पर कोई बात थोपते नहीं थे। उनकी राय सुनते थे। ठीक होती तो उसे वैसा करने की खुशी छूट देते। यदि गलत होती तो बहस करते। या तो अपनी बात दूसरे को समझा देते या दूसरे की समझ लेते।

जवाहर लाल को लोगों से मिलना बहुत पसंद था। जितना समय मिलता वे अलग-अलग लोगों से मिलते। अपने दल के लोगों के लिए जरूर समय निकालते। अलग-अलग काम करने वाले लोग भी मिलने आते। इस तरह वे सरकार का बाहर की दुनिया से तालमेल बनाकर रखते थे।

## 7
## आराम हराम है

गरीब की सबसे बड़ी पूंजी उस की मेहनत है। धनी लोग धन के बल पर चलते हैं। गरीब लोग अपने काम से जीते हैं।

यही हाल देशों का है। धनी देश धन के सहारे आगे बढ़ते हैं। धन से मशीनें खरीदते हैं। धन हो तो दूसरों से काम भी लिया जा सकता है। गरीब देश ऐसा नहीं कर सकते। उनकी सब से बड़ी पूंजी देश के लोग होते हैं। उनको जन बल के सहारे आगे बढ़ना होता है। वहां के लोगों को अधिक काम करना पड़ता है। आराम छोड़ कर काम करना पड़ता है।

जब भारत आजाद हुआ तो बहुत गरीब था। आज भी

गरीब है, पर वैसा नहीं । उस समय देश बंट गया था । लोगों में आपस के झगड़े थे । खाने की कमी थी । हर तरह का सामान बाहर से मंगवाना पड़ता था । धन था नहीं । आगे कदम बढ़ाने का एक ही रास्ता था कि जन बल की पूंजी काम में लाई जाय ।

जवाहर लाल जी ने देश वासियों से कहा, "आराम हराम है । मेहनत करना हमारा काम है । उन्होंने मेहनत करेंगे तो आगे बढ़ेंगे । हाथ पर हाथ धरकर बैठेंगे तो पिछड़े रहेंगे । जो मेहनत नहीं करता भगवान भी उसकी मदद नहीं करता ।"

जवाहर लाल जी जो कहते थे वही करते थे । दूसरों को जो सीख देते थे उस पर खुद भी अमल करते थे ।उन्होने मेहनत के बारे में भी ऐसे ही किया । आराम को हराम समझा । वे दफ्तर में देर तक काम करते थे । कुछ काम घर भी ले जाते थे । दिन में 14 से 16 घंटे काम करते थे ।

जब तक वह प्रधानमंत्री रहे ऐसे ही काम किया । उनके साथी आयु में उनसे छोटे थे । वह थक जाते थे । जवाहर लाल को किसी ने थकते नहीं देखा ।

उनके एक सहयोगी ने उनके एक दिन के काम का ब्यौरा लिखा है । उससे पता चलता है कि वह कितना काम करते थे । बात तब की है जब देश का बंटवारा हुआ था । अगस्त का महीना था । गर्मी जोबन पर थी । पंजाब जल रहा था ।

जवाहर लाल जी देर रात तक काम करते थे ।

जवाहर लाल पाकिस्तान के दौरे पर गये ।

सवेरे 6 बजे हवाई जहाज से चले । एक घंटे की उड़ान से लाहौर पहुंचे । आगे का सफर मोटर और जीप से किया । जहां गये वहां सड़कें अच्छी नहीं थी । गढ्ढ़े थे । धूल थी । झटके लगते थे । मुंह-सिर धूल से अट गया । दिन भर लोगों के दुख-दर्द की कहानियां सुनीं । ऐसे में शरीर थक जाता है । मन भी थक जाता है ।

जवाहर लाल और उनके साथी रात को नौ बजे दौरे से लौटे। खाने पर बैठे। दिन भर जो देखा सुना था उसकी बातें हुई। पाकिस्तान के मंत्रियों से भी बातचीत हुई। आधी रात के आस-पास सब लोग सोने के लिए चले गये। अगले दिन सवेरे 6 बजे हवाई जहाज चलना था।

नेहरूं जी के साथ जो अफसर थे सब थक गये थे। गहरी नींद सोये। नेहरू जी नहीं सोये। देर गए रात तक काम करते रहे। अनेक पत्र और तार लिखवाये जो देखा था वह लिखवाया। जो बातचीत हुई थी उसका भी ब्यौरा लिखवाया। सवेरे तक उनका बक्सा पत्रों और रपटों से भर गया था। नेहरू जी रात को दो बजे तक काम करते रहे। तब भी सवेरे साढ़े पांच बजे तैयार थे। और सब से अधिक चुस्त।

इतना काम उन्होंने एक दिन नहीं किया। उनके सभी दिन ऐसे ही थे। उनके दफ्तर में बत्ती देर रात तक चलती रहती थी।

जवाहर लाल अपने कमरे में एक कविता रखते थे। कविता कुछ ऐसी थी:

जंगल बहुत घना है, अंधेरा है।
मुझे बहुत दूर जाना है।
इससे पहले कि मैं सो जाऊं
मीलों का सफर करना है।

वह कहते थे काम बहुत है। नींद में गंवाने को समय नहीं है। देशवासियों को भी यही सीख देते थे।

उनकी यह बात हमें पल्ले बांध लेनी चाहिए। कभी नहीं भूलना चाहिए। मेहनत ही सफलता की कुंजी है। जो मेहनत नहीं करता, आराम करता है, वह देश की हानि करता ही है, अपनी भी हानि करता है।

## 8

## सच्चा लोकतंत्र

दो आदमियों में दौड़ हो रही है। एक के हाथ पैर ठीक ठाक हैं। दूसरे की एक टांग कटी हुई है। दौड़ में कौन जीतेगा? जाहिर है, कटी टांग वाला हार जायेगा।

यहां बात लोकतंत्र या लोकशाही की है। इसको आम लोगों का या जनता का राज कहा जाता है। गरीब-अमीर सब को वोट देने का हक होता है। भारत में लोगों को वोट देने का हक दिया गया है। शासन का ढांचा इसी हक पर खड़ा है। यही भारत के संविधान की बुनियाद है।

इस ढांचे में एक कमी है। समाज के कुछ लोग बहुत अमीर हैं। अधिक लोग बहुत गरीब हैं। वोट का, राय देने का हक, सब को बराबर है। पुरुष हो या स्त्री, गरीब हो या

अमीर, वह एक ही वोट दे सकता है । तो फिर कमी क्या है ?

कमी है । जो अमीर है उसका हक कोई नहीं छीन सकता । वह अपना वोट आजादी से दे सका है । कोई उसे रोक नहीं सकता । लेकिन गरीब को डराया जा सकता है । धमकाया जा सकता है । पैसे का लोभ देकर बहकाया जा सकता है । इस तरह गरीब का हक अमीर के हक के बराबर नहीं रहता ।

जवाहर लाल नेहरू इस बात को समझते थे । तभी वह अमीर और गरीब का अंतर कम करना चाहते थे । उनका कहना था कि जब तक यह अंतर रहेगा तब तक लोकतंत्र अधूरा रहेगा । उसे लंगड़ा कहा जायेगा ।

लेकिन इस कमी के कारण वह लोकतंत्र के विरोधी नहीं बने । कुछ लोग कहते थे जो वोट की कीमत नहीं जानता उसे वोट देने का हक भी नहीं मिलना चाहिए । जवाहर लाल ऐसा नहीं सोचते थे । वह कहते थे, हक दे दो, कीमत भी समझ में आ जाएगी । जब तक हक नहीं मिलेगा, कीमत कैसे समझ में आयेगी ।

इसके लिए उनकी एक दलील थी कि "विदेशी सरकार कहती थी, भारत के लोग आजादी लेने के लायक नहीं । वह इस की कीमत नहीं जानते । अगर इनको आजादी मिल जाये तो संभाल नहीं सकेंगे ।"

गांधी जी कहते थे, “आजादी मिलेगी तभी तो भारतवासी इसे पहचानेंगे। तभी वह इसकी कीमत जानेंगे। विदेशी शासन खत्म हो जाए। भारतवासी अपने आप देश को संभाल लेंगे।”

ऐसे ही वोट का हक सब को मिल जाए तो वह इसे संभाल लेंगे। संविधान में सब को वोट देने का हक यही समझकर दिया गया है।

जवाहर लाल जी वोट का हक देकर बस करने वाले नहीं थे। वह ऐसा समाज बनाना चाहते थे, जिसमें ऊंच-नीच का भेद न हो। गरीब अमीर का अंतर न हो। बलवान, कमजोर का हक न छीन सके।

ऐसा करना आसान नहीं था। ऊंच-नीच, गरीबी-अमीरी हजारों सालों से चले आ रहे थे। एक छलांग लगाकर इस खाई को पार नहीं किया जा सकता था। उन्होंने धीरे धीरे इस कमी को दूर करने का मार्ग दिखाया।

सब से पहले तो उन्होंने देश को राह बताई। इस सवाल का जवाब संविधान के शुरू में दिया गया है। उसमें समाज को दिशा दी गई है। लक्ष्य बताया गया है। ऐसा समाज बनाना है जिसमें धन, धर्म से आदमी को ऊंचा या नीचा न माना जाए।

हमारे देश में छूआछूत मानी जाती थी। कुछ जातियों के लोगों को अछूत माना जाता था। उनसे छू जाने पर नहाने

की जरूरत समझी जाती थी । गांधी जी छूआछूत को समाज का कोढ़ कहते थे । जवाहर लाल की सरकार ने इसे खत्म करने के लिए कानून बनाया । जिसके अनुसार छूआछूत मानना या बरतना अब अपराध है । ऐसा करने वाले को दण्ड दिया जाता है ।

एक ऐसा ही तीसरा कदम उठाया गया । जमींदारों के पास हजारों एकड़ भूमि थी । करोड़ों किसान उस भूमि को जोतते थे । पर उसकी उपज पर उनका हक नहीं था । न भूमि किसानों की थी न उपज ।

यह न्याय की बात नहीं थी । भूमि उसकी होनी चाहिए जो जोते । अनाज उसका जो उपजाए । समाज से यह अन्याय दूर करने के लिए जमींदारी खत्म करने का कानून बना । कोई कितनी भूमि का मालिक हो सकता है, इसकी सीमा बांध दी गई । जो भूमि जमींदारों से बची वह किसानों को दे दी गई ।

इतनी भूमि नहीं थी कि सब को मिल जाए । भूमिहीन किसानों के लिए भी कुछ किया गया । तय किया गया कि उनको उचित मजदूरी दी जाय ।

इस तरह उन्होंने लोकतंत्र मजबूत करने की कोशिश की । समाज को समता की ओर बढ़ाया । लोकतंत्र का लंगड़ापन दूर करने का उपाय बताया ।

## 9

# महिलाओं को आगे लाओ

भारत की लगभग आधी आबादी महिलाओं की है । पुरुषों से कुछ कम है । एक सौ पुरुष हैं तो 93 महिलाएं हैं । जब तक महिलाएं आगे नहीं बढ़ेंगी देश आगे नहीं बढ़ सकता । उनको आजादी न हो तो देश आजाद नहीं कहलाएगा ।

जवाहर लाल और उनके पिता आजादी की लड़ाई में आगे आए । उनके साथ-साथ घर की महिलाएं भी आगे आई । उनकी पत्नी, बहन और बेटी सब लड़ाई में जुट गये । जवाहर लाल ने उनको रोका नहीं । उनका हौसला बढ़ाया । जहां भी महिलाएं काम करती थीं उनको अच्छा लगता था । वह उनकी मदद करते थे । उनको आगे बढ़ने का अवसर देते थे ।

शासन के कामों में भी वह उनको आगे बढ़ाते थे । वह चाहते थे अधिक से अधिक महिलाएं लोक सभा में और राज्यों की विधान सभाओं में आयें । नगर पालिकाओं और नगर निगमों में आयें । देश, राज्य और नगर का शासन चलाने में पुरुषों के बराबर रहें । उन्होंने चुनाव में अधिक से अधिक महिलाओं को आगे लाने की कोशिश की ।

जवाहर लाल कहते थे: आधी आबादी को अलग-थलग रख दिया जाय तो लोकतंत्र अधूरा होगा। उनका काम केवल घर के अंदर नहीं, बाहर भी है। उनको हर काम करने का अवसर मिलना चाहिए। कोई काम ऐसा नहीं जो केवल पुरुषों के लिए हो। कोई काम ऐसा नहीं जिसे महिला न कर सकें। जो काम पुरुष कर सकते हैं वह महिलाएं भी कर सकती हैं।

वे केवल घर चलाना ही नहीं जानतीं, वे दुकान भी चला सकती हैं। कारखाने भी चला सकती हैं। अध्यापक बन सकती हैं। अफसर बन सकती हैं। पहाड़ों पर चढ़ सकती हैं। हवाई जहाज चला सकती हैं। कौन सा काम है जो वह नहीं कर सकती?

जवाहर लाल ने कहा, "महिलाओं की आजादी और बराबरी का अर्थ यह नहीं कि वे कुछ काम-धाम न करें। इसका अर्थ है वे पढ़ें-लिखें। पुरुषों के बराबर हक पायें और उनके बराबर काम भी करें।"

वह कहा करते थे, "हम महिलाओं को जैसा बनाएंगे वैसा ही भारत बनेगा। नारी आने वाले कल की बुनियाद है।"

बच्चे सब से पहली सीख मां से लेते हैं। मां के मन में भय होगा तो बच्चा डरपोक होगा। मां निडर और बहादुर होगी तो बच्चे भी वैसे ही होंगे। मां को पढ़ने-लिखने का

नारी आने वाले कल की बुनियाद है

शौक होगा तो बच्चों को भी होगा ।

हमारे देश की महिलाएं पिछड़ी हुई थी । केवल भारत में ही नहीं दुनियाभर में यही हाल है । इस हालत को बदलने में भारत ने बहुत पहल की । दूसरे देशों में महिलाओं को बराबरी के लिए लड़ना पड़ा । भारत में ऐसा नहीं करना पड़ा । जवाहर लाल और उनके साथियों ने अपने आप ही उनको हक देने की पहल की ।

शासन के ढांचे में महिलाओं को बराबर हक दिया गया

है । वह शासन में ऊंचे से ऊंचा पद पा सकती हैं । राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, न्यायाधीश जो चाहें बन सकती हैं । बनी भी हैं । शर्त्तें वही हैं जो पुरुषों के लिए हैं ।

आजादी आने से पहले यह बराबरी नहीं थी । महिलाओं के रास्ते में बहुत रूकावटें थीं । उन में पढ़ाई-लिखाई कम थी । वे घर की चार दीवारी में बंद रहती थीं । बहुत घरों की महिलाएं परदें में रहती थीं । बाप से जो बेटों को मिलता था, बेटियों को नहीं मिलता था ।

विवाह के बाद पति अपने को पत्नी से ऊंचा समझता है । महिलाएं भी यह मानकर चलती हैं । जवाहर लाल इस सोच को बदलना चाहते थे । महिलाओं को पुरुषों के बराबर लाने के लिए उन्होंने अनेक कानून बनवाए ।

आजादी के बाद महिलाओं की हालत में बहुत सुधार हुआ । फिर भी उतना नहीं हो पाया जितना वह चाहते थे । इसके लिए अभी और काम करने की जरूरत है ।

## 10

## भारतवासी एक, धर्म अनेक

दुनिया में बहुत से धर्म हैं । सभी लोग कोई ना कोई धर्म मानते हैं । बहुत कम लोग हैं जो किसी धर्म को नहीं मानते ।

भारत बहुत से धर्मों का देश है। कई धर्म तो पैदा ही यहां हुए हैं। कुछ धर्म ऐसे हैं जो भारत से बाहर पैदा हुए। इन सभी धर्मों के मानने वाले यहां बसते हैं। कोई एक को मानता है कोई दूसरे को। थोड़े से लोग ऐसे हैं जो सब को मानते हैं।

सब के सब भारत के नागरिक हैं। भारतवासी कहलाते हैं। भारतवासी हिन्दु भी हो सकता है, मुसलमान भी, ईसाई और सिख भी। यहूदी और पारसी भी। बौद्ध और जैन भी।

नागरिक होने का हक किसी धर्म से जुड़ा हुआ नहीं है। नागरिक होने का हक क्या है? आप जानना चाहेंगे। जो नागरिक है वह शासन बनाने में राय दे सकता है। चुनाव के समय सभी नागरिक वोट देते हैं। कोई चाहे किसी धर्म को माने, वोट देने का हकदार है। जो किसी भी धर्म को न माने उसको भी वैसा ही हक है।

हर नागरिक को शासक बनने का भी हक है। राष्ट्रपति बनने, प्रधानमंत्री बनने या अफसर बनने का हक है। सरकार से जानमाल की रक्षा करवाने का हक है। हर प्रकार की सहायता पाने का हक है। कोई हक किसी धर्म को मानने से जुड़ा हुआ नहीं। हर नागरिक का हक है कि वह किसी भी धर्म को माने। यह भी हक है कि वह अपने धर्म का प्रचार करे।

इसके लिए एक शर्त है । धर्म के प्रचार में भय या लोभ से काम न लिया जाय । कोई यह नहीं कह सकता कि इस या उस धर्म को मानोगे तो धन या पद मिलेगा । यह भी नहीं कह सकते कि नहीं मानोगे तो कुछ नहीं मिलेगा ।

एक दूसरी शर्त भी है । अपने धर्म से प्रेम का मतलब दूसरे धर्म से नफरत न हो । ऐसा करने से झगड़े पैदा होते हैं । धर्म के नाम पर समाज बंट जाता है । देश में एकता रखने के लिए सभी धर्मों का आदर करना जरूरी है । किसी का अनादर करने से एकता टूटती है ।

जवाहर लाल जी इस बात पर बहुत जोर देते थे । वह कहते थे, "नागरिकता के हक को धर्म के साथ न जोड़ा जाए । ऐसा करने से देश पिछड़ा जाएगा । शासन को किसी एक धर्म से नहीं जोड़ा जा सकता । शासन किसी धर्म से जुड़ जाएगा तो दूसरे धर्मों वाले उसे अपना शासन नहीं मानेंगे । ऐसा होगा तो शासन ठीक नहीं चलेगा । आजकल शासन सब की राय से चलता है । जोर-जबरदस्ती से, ताकत के भरोसे, शासन नहीं चल सकता ।"

जवाहर लाल लोकतंत्र के हामी थी । लोकतंत्र में विचारों की अदला-बदली होती है । समाज को चलाने के बारे में अलग-अलग राय हो सकती है । सब को अपनी-अपनी राय देने का हक है ।

धर्म आस्था पर टिका होता है । आस्था का विरोध नहीं

किया जा सकता । विरोध करने से विश्वास को ठेस लगती है । इस धर्म के मानने वाले का दिल दुखता है ।

जहां विश्वास और धर्म की बात आ जाती है वहां बहस नहीं हो सकती । विचारों का लेन-देन नहीं हो सकता । सब की राय से शासन चलाने में रूकावट आ जाती है । इसलिए जवाहर लाल कहते थे कि धर्म को राजनीति से अलग रखा जाय ।

यह बात आजादी की लड़ाई से समझ में आई । विदेशी शासक भारत वासियों को धर्म के नाम पर लड़ाते थे । हम आपस में लड़ते थे तो दूसरे हम पर राज करते थे । हम एक हो गए तो आजाद हो गए ।

जब हम आजाद हुए तो देश दो भागों में बांटा गया । कुछ मुसलमान नेताओं ने कहा, हम अलग देश बनाना चाहते हैं । विदेशी राज ने उनको आगे बढ़ाया । दूसरे लोग उस चाल को तोड़ न सके ।

देश बंट गया तो आवाज उठी : अब भारत को हिन्दू देश बना देना चाहिए । जवाहर लाल ने कहा, "नहीं । हम ऐसा नहीं करेंगे । हम आजादी को धर्म से नहीं जोड़ेंगे । नागरिकता के हक को धर्म से अलग रखा जायेगा । जो धर्म के नाम पर अलग हो रहे हैं वे गलत हैं ।"

आज हम कह सकते हैं कि हम ठीक थे । हमारी एकता बनी हुई है ।

# 11

# एकता का जादू

एकता की ताकत के सामने तोप और बन्दूक की ताकत भी कुछ नहीं है। एकता से जनता को बल मिलता है। यह किसी भी सेना के बल से अधिक होता है। इस लिए गांधीजी सभी देशवासियों को एक करना चाहते थे। उनका कहना था कि एकता के बिना आजादी मिले तो भी नहीं लूंगा। क्योंकि एकता नहीं होगी तो आजादी की रक्षा नहीं हो सकेगी। जिसकी रक्षा नहीं कर सकते उसको लेने का क्या लाभ?

गांधी जी की इस बात में जादू था। जवाहर लाल जी ने इसे समझा था। उन्होंने इस आदर्श को अपने जीवन में ढाला था। उन्होंने आजादी का अर्थ समझाया। साथ ही यह भी बताया कि आजादी के लिए एकता क्यों जरूरी है।

एकता के जादू को अंग्रेज भी समझते थे। भारतवासी एक हो जायें तो विदेशी शासन टिक नहीं सकता। इस लिए अंग्रेज भारत में एकता नहीं होने देना चाहते थे। उनका हित इसी में था कि भारतवासी आपस में लड़ते रहें।

एकता की राह आजादी की ओर ले जाती थी। फूट गुलामी की कैद में सड़ाती थी। भारत की आजादी की लड़ाई में एकता और फूट का मुकाबला था।

भारत अलग-अलग तरह के फूलों का बाग है। इसमें

हम सब भारत वासी हैं, चाहे भाषा अलग हो, पहनावा अलग हो।

एक ही तरह के लोग नहीं रहते । दुनिया के सभी धर्म यहां मिलते हैं। लोग अलग-अलग भाषाएं बोलते हैं। खान-पान, पहनावे अलग-अलग हैं । यह अनेकता भारत की एकता भी है, कमजोरी भी । सभी लोग सदियों से साथ मिलकर रहते आए हैं ।

एक ही तरह के लोग एक साथ आयें तो ताकत बनती है । अलग-अलग तरह के लोग एक साथ आयें तो और बड़ी ताकत बनती है । यह ताकत पहली ताकत से अधिक मजबूत होती है । एक ही अनाज खाने से ताकत मिलती है । अनेक अनाज मिलाकर खाने से और अधिक ताकत मिलती है । रंग-बिरंगे फूलों का बाग एक ही रंग के फूलों के बाग से अधिक सुंदर लगता है । भारत की अनेकता भारत की ताकत है ।

अंग्रजों ने हमारी इस अनेकता को फूट में बदल दिया । ताकत को कमजोरी बना दिया । अंग्रेजों को भारतवासियों का एक होना पसंद नहीं था। उन्होंने एक चाल चली। हिन्दूओं से कहा, मुसलमान भी विदेशी हैं । हमको निकालते हो तो इनको भी निकालो । उधर मुसलमानों से दूसरी बात कही । उनको कहा, हमने राज तुमसे छीना है । हम जायें तो राज तुमको मिलना चाहिए ।

अंग्रेज शासकों ने एक और बात भी फैलाई थी । हिन्दुओं और मुसलमानों का पानी अलग-अलग कर दिया।

जगह-जगह लिखा रहता था, "हिन्दू पानी" "मुसलमान पानी"। इससे फूट और अलगाव की सोच बनी।

जवाहर लाल ऐसी चालों को समझते थे। उन्होंने इसका विरोध पूरे जोर से किया। बोलकर, लिखकर, समझाया कि यह बातें गलत हैं। उन्होंने बताया कि जो ऐसा कहते हैं उनका किसी धर्म से कोई लगाव नहीं। हमें आपस के रिश्ते आपस में तय करने चाहिए। घर की लड़ाई निपटाने के लिए बाहर वालों को बीच में नहीं डालता चाहिए।

आजादी आने के बाद भी वह एकता पर बल देते रहे। एकता आजादी लेने के लिए चाहिए थी। देश को मजबूत करने के लिए भी चाहिए थी।

एकता को मजबूत करने के लिए समाज के सभी भाग मजबूत होने चाहिए। कोई हिस्सा कमजोर रहे तो देश कमजोर रहता है। इस लिए जवाहर लाल कमजोरों को मजबूत बनाने पर जोर देते थे।

कमजोर हिस्से कौन से हैं? जिस धर्म के अनुयायी कम हैं वे कमजोर माने जाते हैं। जिन जातियों के लोगों को कभी पढ़ाई करने का अवसर नहीं मिला, वे कमजोर हैं। महिलाएं इन पिछड़े हिस्सों में आती हैं। जवाहर लाल इन लोगों को आगे बढ़ाना चाहते थे। उनके विकास के लिए वह खास सुविधा देने के हक में थे।

ऐसा नहीं किया जाएगा तो कुछ ऊंचे रहेंगे और कुछ नीचे। बराबरी नहीं होगी। और बिना बराबरी के एकता नहीं बनाई जा सकती।

## 12
## विकास की राह

गरीबी से खुशहाली की ओर बढ़ने को विकास कहते हैं। यह बड़ा काम है। बिना सोचे समझे नहीं किया जा सकता। सोच समझकर रास्ता बनाना होता है। इस तरह रास्ता बनाकर चलने को योजना कहते हैं।

आप जब चलने लगते हैं तो कई सवाल उठते हैं। हम कहां खड़े हैं? कहां जाना चाहते हैं? पैदल या गाड़ी से?

आजाद होने के बाद देश आगे कैसे बढ़े? प्रधानमंत्री जवाहर लाल चाहते थे कि हर आंख से आंसू पोंछा जाय। कोई दीन दुखी न हो। हर चेहरा हंसता दिखाई दे। सब पढ़े-लिखे हों। यदि कोई बीमार पड़े तो एकदम इलाज हो। हर हाथ को काम मिले, हर खेत को पानी।

महात्मा गांधी का भी यही सपना था। जिस भारत में गरीबी रहे, बेकारी रहे, बीमारी रहे, लोग अनपढ़ रहें, ऐसे भारत को वह आजाद नहीं मानते थे। नेहरू जी बापू के इस

सपने को पूरा करना चाहते थे ।

आजादी आई तो अपनी तकदीर अपने हाथ में आ गई । अब तो सब अपने आप करना था । गरीबी हटानी थी । उपज बढ़ानी थी । खेतों को पानी पहुंचाना था । कारखानों को बिजली देनी थी । जिनके पास काम नहीं था उनको काम देना था । ज्ञान फैलाना था । विज्ञान का लाभ उठाना था ।

यह सब कुछ किसी जादू से तो हो नहीं सकता था । भगवान के भरोसे भी छोड़ा नहीं जा सकता था । जवाहर लाल अटकलें लगाने वाले आदमी नहीं थे । सोच सोचकर चलना ही उनको पसंद था ।

सोच समझ कर योजना बनाने का काम जानकार लोगों को सौंपा गया । योजना बनाने वाले विभाग को योजना आयोग कहा गया । जवाहर लाल खुद इस आयोग के सभापति बने ।

वह नाम के सभापति नहीं थे । योजना बनाने के काम में बड़ी रुचि लेते थे । साल में लगभग बीस बार वह योजना के बारे में बहस करते थे । अपनी ओर से सुझाव भी देते थे । दूसरों के सुझाव मानने से पहले अच्छी तरह समझते भी थे ।

देश गरीब था । धन कम था । इसलिए सोच समझकर धन लगाना था । कम धन लगा कर अधिक से अधिक लाभ पाना था ।
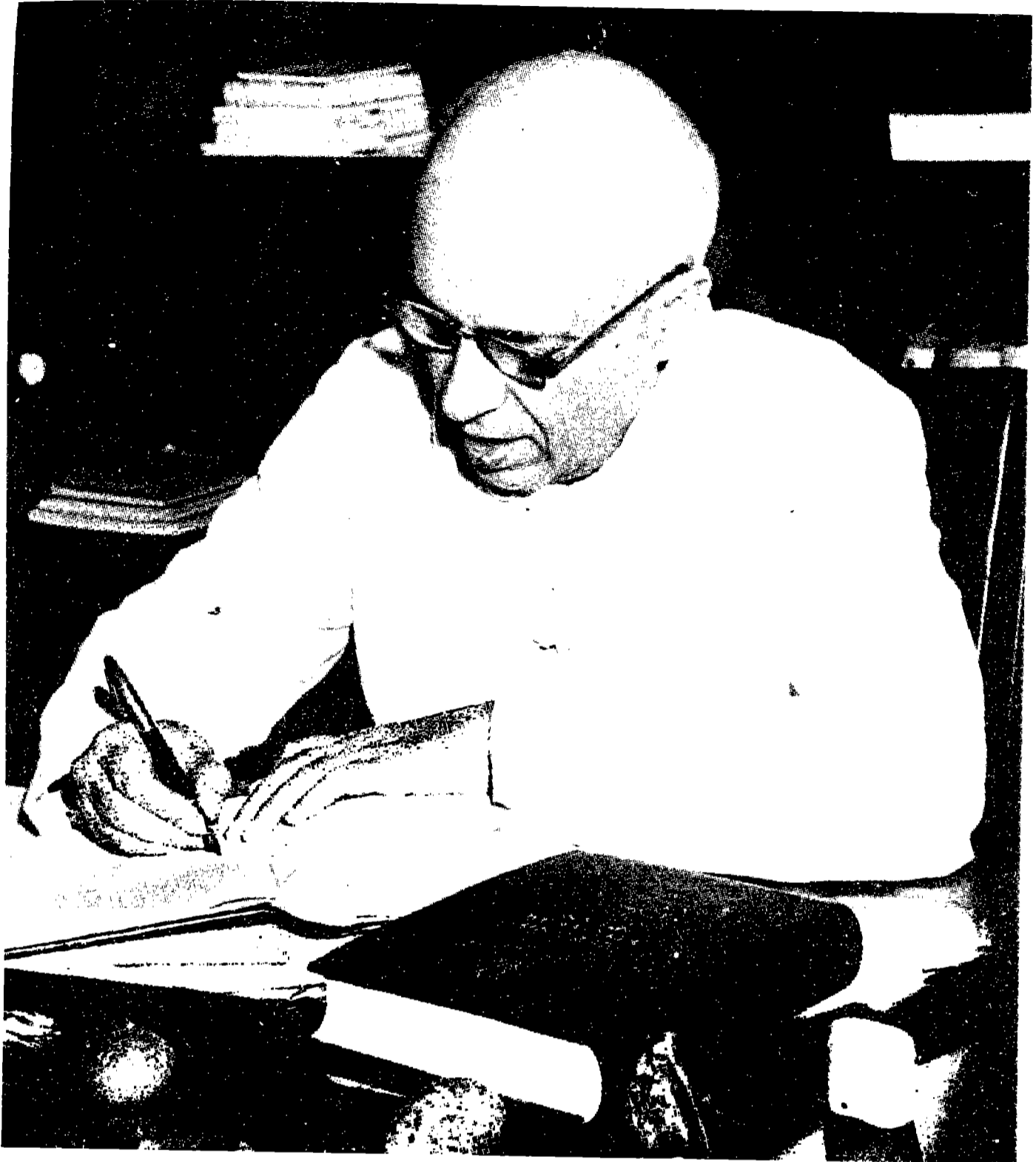
पहली पंचवर्षीय योजना पर हस्ताक्षर करते हुए नेहरू जी।

योजना आयोग अनेक सवालों पर विचार करता था। देश में कितना धन है? कितने लोग हैं? क्या है? क्या नहीं है? इसका लेखा-जोखा करता था। हिसाब-किताब करके तय करता था कि लोगों को सुख कैसे मिल सकता है। पहले क्या मिल सकता है? बाद में क्या?

खेतों के लिए पानी कैसे पहुंचे? खाद कैसे और कहां

से आए ? कल-कारखाने कैसे बनें ? लोगों की पढ़ाई का क्या प्रबंध हो ? रोगियों के इलाज और दवादारू के लिए क्या किया जाए ? पुलिस और सेवा पर कितना खर्च किया जा सकता है ? ऐसे सभी सवालों के जवाब ढूंढ़ना योजना आयोग का काम था । आज भी ऐसा ही है ।

इस तरह योजना आयोग सरकार के सभी कामों की रूपरेखा बना देता है । इस काम में मंत्रियों से सलाह भी की जाती है । राज्यों की सरकारों से भी राय ली जाती है ।

जवाहर लाल योजना बनाने का काम ऊपर ही ऊपर नहीं करना चाहते थे । वह आम लोगों को भी इसमें शामिल करना चाहते थे । योजनाएं आखिर उनके लिए ही बनती हैं । उनका असर उन पर होता है । इसलिए योजना बनाने में उनकी राय भी लेनी चाहिए ।

वह जगह-जगह जाकर योजना की बात करते । लोगों को समझाते उनके लिए क्या सोचा जा रहा है । पूछते भी थे कि क्या होना चाहिए । जगह-जगह योजनाओं पर बहस भी करवाई ।

विकास की योजना हमेशा के लिए तो नहीं बन सकती । हर कदम उठाने के बाद हालत बदल जाती है । तब सोचना होता है आगे क्या करें ? इसलिए एक योजना पांच साल के लिए बनाई जाती है ।

योजना कैसे चली ? इसका क्या असर हुआ ? आयोग

यह सब देखकर आगे के लिए योजना बनाता है । इस तरह योजना आयोग का काम लगातार चलता रहता है ।

जवाहर लाल के समय में तीन योजनाएं बनीं । अब भी योजना बनाने का काम जारी है । योजना कैसी हो इस पर विचार बदलते रहते हैं । लेकिन ऐसा कोई नहीं कहता कि योजना नहीं होनी चाहिए ।

## 13
## विज्ञान की देन

एक आदमी पेड़ के नीचे बैठा था । पेड़ से एक फल गिरा । वह आदमी सोचने लगा, यह फल नीचे क्यों गिरा ? ऊपर क्यों नहीं उड़ा ? धरती की ओर क्यों आया ? आकाश की ओर क्यों नहीं गया ?

आप भी ऐसी बातें देखते हैं । हम भी देखते हैं कि पेड़ से फल धरती पर गिरता है । धूप निकलती है तो गर्मी लगती है । क्या हमारे मन में भी ऐसे सवाल उठते हैं ? बहुत से लोगों के मन में यह सवाल नहीं आते ।

जिस आदमी ने फल गिरने के बारे में सोचा था वह बहुत बड़ा आदमी बन गया । उसने अपने सवालों का जवाब खोज निकाला । धरती चीजों को अपनी ओर खींचती है ।

धरती की इस ताकत को पहचानने से दुनिया को बड़े-बड़े लाभ हुए। इससे और बहुत सी बातें जानने में मदद मिली। उस मदद से नई मशीनें बनीं। बहुत से काम जो हाथ से होते थे अब मशीनों से होने लगे। उससे चीजों की पैदावार बढ़ी। लोगों को चीजें अधिक मिलने लगीं।

विज्ञान केवल मशीनों या कलपुर्जों का नाम नहीं है। घटनाओं का कारण ढूंढने को विज्ञान कहते हैं। विज्ञान आदमी को आस-पास की घटनाओं का कारण ढूंढ़ने में मदद करता है।

जवाहर लाल इस तरह सोचने पर बहुत जोर देते थे। वह चाहते थे सब लोग सोचने की आदत डालें। वह कहा करते थे, "मुझे इस बात की चिंता नहीं कि लोग क्या सोचते हैं। मुझे चिंता है कि लोग सोचते ही नहीं हैं। उनको सोचना चाहिए।" वह चाहते थे सब लोग विज्ञान का तरीका अपनाएं। जो देखें उसका कारण ढूंढ़ने की कोशिश करें।

दुनिया में वही लोग आगे बढ़े। जिन्होंने विज्ञान का दामन थामा। उनको प्रकृति के भेद मालूम हो गए। यह भेद जानकर वह प्रकृति की शक्तियों पर काबू पाने लगे। अपनी शक्ति बढ़ाने लगे। पानी की ताकत से पनचक्की बनाई। हवा की ताकत से पवन चक्की बनाई। भाप की ताकत से इंजन चलाए। चक्की से आटा पीसना आसान हो गया। इंजन बना तो रेलगाड़ी आई।

इस प्रकार विज्ञान ने जीवन सुखी बनाया। इसी ने हमको

बिजली पैदा करनी सिखाई। बिजली से रोशनी मिलती है। मशीनें चलती हैं। बिजली के पंखे हवा देते हैं।

जो देश इस तरह नहीं सोचते वह पीछे रह जाते हैं। वहां कल-कारखाने नहीं बनते। नई नई मशीनें नहीं बनतीं। देश आगे नहीं बढ़ता। ऐसे देश और ऐसे लोग गरीब रह जाते हैं। भारत इसीलिए गरीब हो गया था। वह विज्ञान की दौड़ में पीछे रह गया था। दूसरे देश मशीनें बना रहे थे। भारत ने उधर ध्यान नहीं दिया।

जवाहर लाल नेहरू चाहते थे भारत की गरीबी दूर हो। इसके लिए वह विज्ञान का सहारा लेना चाहते थे। इसीलिए वह सब लोगों को विज्ञान की ओर ले जाने की कोशिश करते थे। विज्ञान को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने बहुत कुछ किया। विज्ञान के काम के लिए सुविधाएं पैदा कीं। इस के लिए सब से जरूरी चीज है प्रयोगशाला।

जो कुछ सोचा जाता है उसकी जांच प्रयोगशाला में होती है। जैसे पेड़ से आम धरती पर गिरता देखकर सवाल होता है कि क्या सब चीजें ऐसे ही गिरती हैं। सोचने वाला प्रयोगशाला में जाएगा। वहां पेड़ बनाएगा या पेड़ जैसी कोई चीज खड़ी करेगा। उस पर फल या कोई और चीज लटका देगा। फिर वह धागा काट देगा जिससे वह लटक रहा हो। फल नीचे गिरेगा तो उसको धरती की शक्ति वाला नियम पता चलेगा।

ऐसी अनेक खोजें होती हैं। पेड़-पौधे कैसे अच्छे उगें? पक्के रंग कैसे बनाए जाएं? फूलों से इत्र कैसे निकाला जाए? रोगों का इलाज कैसे किया जाए? ऐसे सवालों के जवाब ढूंढ़ने के लिए अलग-अलग प्रयोगशालाएं बनाई गई।

आज हमारे देश में बड़े-बड़े कारखाने हैं। नदियों पर बांध बन गए हैं। पानी से बिजली बनती है। धरती से तेल और गैस निकाले जाते हैं। हवाई जहाज हम खुद बनाते हैं। हमारे देश के लोग अंतरिक्ष की सैर कर आए हैं।

विज्ञान का सहारा न होता तो यह सब नहीं हो पाता।

## 14
## प्रकृति से प्रेम

आजादी की लड़ाई के दौरान जवाहर लाल नेहरू कई बार जेल गए। जेल में वह हर सवेरे सैर किया करते थे। उनको सुबह की हवा बहुत अच्छी लगती थी। उस समय पंछी चहचहाते थे, तो उनको बहुत भाता था। उनकी कोठरी के बाहर छोटा सा आंगन था। उसमें वह पौधे उगा लेते थे। फूल पत्तों से भी उनको बड़ा प्रेम था।

एक बार वह सैर कर रहे थे। उनके एक साथी भी साथ

चल रहे थे । उन्होंने आंगन में गिलहरी के दो बच्चे देखे । वह उनके पास गये । बच्चे हिले नहीं । जवाहर लाल हैरान हुए । बच्चे आहट पाकर भाग जाते हैं । वह क्यों नहीं भागे ।

आस-पास देखा । शायद उनकी मां वहां हो । वह भी नहीं थी । जवाहर लाल गिलहरी के बच्चों के और पास गये । ध्यान से देखा । वे मरे तो नहीं थे । सांस चल रही थी ।

जवाहर लाल ने अपने साथी से कहा, "इनकी मां शायद नहीं रही । अब हमें मां का काम करना चाहिए ।"

उन्होंने एक बच्चे को उठा लिया । उसको अपने सीने से लगाया । उनके शरीर की गर्मी पाकर वह हिलने लगा । उनके साथी ने भी वैसा ही किया । दूसरा बच्चा भी हिलने लगा । गिलहरी के दोनों बच्चे जीवित थे । मरे नहीं थे । इस पर जवाहर लाल बहुत खुश हुए ।

अब सवाल था कि बच्चों को दूध कौन पिलाए ? मां तो थी नहीं । भूख से बच्चे मर जायेंगे । क्या किया जाए ? जेल में बच्चों को दूध पिलाने वाली बोतल भी नहीं थी ।

जवाहर लाल जी को एक उपाय सूझा । उनके पास एक नली थी । नली के एक सिरे पर रबड़ की टोपी थी । उस नली से वह कलम में स्याही भरा करते थे । उन्होंने उस नली से काम लिया । उसमें स्याही की जगह दूध भर लिया । वह नली गिलहरी के बच्चे के मुंह में लगा दी । बच्चा दूध पीने

पशु-पक्षियों से नेहरू जी को बड़ा प्रेम था।

लगा। वह पी चुका तो दूसरे को भी पिलाया। दोनों बच्चे दूध पीकर खेलने लगे।

जवाहर लाल भी उनके साथ खेलने लगे। गिलहरी के बच्चों को उनसे प्यार हो गया। वह उनके पास आ जाते। जवाहर लाल उनको उठाकर जेब में डाल लेते। कभी-कभी वह बच्चे उनकी जेब में सो भी जाते। जब तक वह वहां रहे गिलहरी के बच्चों से हर सवेरे खेलते। पहले तो उनको दूध पिलाना पड़ता था। थोड़े दिनों में वह अपने आप खाने-पीने लगे। इससे जेल का अकेलापन कम हो गया।

जवाहर लाल के लिए वह केवल खेल की बात नहीं

थी। वह पशु-पक्षियों से वैसे भी बहुत प्रेम करते थे। सभी से कहते थे कि उनसे प्रेम करना चाहिए।

हमारे चारों ओर बहुत सुंदर चीजें हैं। पहाड़ हैं, नदियां हैं। पेड़ और पौधे हैं। फूल और पत्ते हैं। छोटे-बड़े जानवर हैं। पशु-पक्षी हैं। कुछ शहरों और गांवों में हमारे साथ रहते हैं। बहुत से जंगलों में रहते हैं। जवाहर लाल कहते थे इन सब से प्रेम करना चाहिए। अपने इस अड़ोस-पड़ोस को हम पर्यावरण कहते हैं।

पर्यावरण को बचा के रखना अपने आप को बचाने के समान है। जवाहर लाल कहते थे कि जंगल काटने नहीं चाहिए। बचाने चाहिए। एक पेड़ काटो तो उसकी जगह पेड़ लगाओ।

जानवरों, पशु-पक्षियों की रक्षा पर भी वह जोर देते थे। कहा करते थे कि इन के बिना जीवन फीका हो जायेगा। और देशों में जानवरों से लोग बहुत प्यार करते हैं। जवाहर लाल भारत की यादगार के रूप में यहां के सुंदर जानवर दूसरे देशों में भेजते थे।

पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, प्रकृति की सुंदरता हैं। इनसे प्यार करना सुंदरता से प्यार करने के समान है।

# 15

# जय भारत, जय जगत

जवाहर लाल को महापुरुष कहा जाता है । महापुरुष उसको कहते हैं जो आम आदमियों से बड़ा हो । शरीर से बड़ा नहीं । महापुरुष गुण से बड़ा होता है ।

वह क्या गुण हैं जो किसी को बड़ा बनाते हैं ? किसी को महापुरुष क्यों माना जाता है ? इस सवाल का एक ही जवाब है । महापुरुष वह है जो सब की सोचे । दूसरों के लाभ को अपना लाभ समझे । जिसे पराई पीर अपनी पीर लगे ।

जवाहर लाल ऐसे ही थे । उनको दूसरों को सुख पहुंचा कर ही सुख मिलता था। अपनी सुख-सुविधा में, ऐश-आराम में, उनको चैन नहीं मिला । इसीलिए उन्होंने देश सेवा का मार्ग अपनाया । दुख झेले । जेल गए । पर इस सेवा में उनको सुख मिलता था । वह अपने को देश और देशवासियों से अलग नहीं मानते थे । यही उनकी देशभक्ति थी ।

उनकी देशभक्ति में एक और गुण था । वह अपने देश से प्यार करते थे । किसी दूसरे देश से घृणा नहीं करते थे । भारत को बाकी दुनिया से अलग नहीं समझते थे । अपने

देश के लाभ को दूसरे किसी देश के लाभ से अलग नहीं मानते थे। दूसरे को हानि पहुंचाकर अपने देश को आगे बढ़ाना ठीक नहीं समझते थे। उन को सारे जगत की जय में भारत की जय दिखाई देती थी।

जवाहर लाल मानते थे कि आजादी को बांटा नहीं जा सकता। दुनिया के सारे देश आजाद नहीं तो कोई भी देश आजाद नहीं। भारत की आजादी की लड़ाई को वह दुनिया भर में चल रही आजादी की लड़ाई का अंग मानते थे।

भारत आजाद हो गया। इसको उन्होंने अपने देश की अंतिम जीत नहीं माना। उन्होंने कहा, दुनिया में आजादी की सफलता का यह पहला कदम है।

आजादी की पौ फटते ही जवाहर लाल ने ऐसे देशों को एक साथ बुलाया। आजादी की लड़ाइयां लड़ने वाले नेता दिल्ली में मिल बैठे। सोचा कि आजादी का रथ कैसे आगे बढ़ाया जाय।

हर आजाद देश दूसरे देशों के साथ नाते जोड़ता है। यह नाते कैसे हों इसे विदेश नीति कहते हैं। भारत की विदेश नीति जवाहर लाल जी ने बनाई। इस नीति में पहली बात सब देशों की आजादी थी। आजादी के लिए लड़ने वालों की सहायता करना। जहां किसी की आजादी को खतरा हो उस खतरे का विरोध करना।

नेहरू जी विकास को भी अलग-अलग नहीं बांटते थे।

वह दूसरे देश को दबाकर आगे बढ़ना विकास नहीं मानते थे। दूसरे देश के धन से अपने देश की गरीबी दूर नहीं की जा सकती। गरीब देशों को कंधे से कंधा मिलाकर चलना होगा। उनकी समझ में गरीब देशों के विकास का यही मार्ग है।

जो देश अमीर थे उनको भी वह यही समझाते थे। वह अगर गरीब देशों की सहायता करें तो उनका सुख भी बढ़ेगा। चारों ओर गंदगी हो तो कोई एक घर साफ नहीं रह सकता। साफ घर में रहने वालों को भी बदबू आएगी। बीमारी फैलेगी तो वह भी बच नहीं पाएंगे। इसलिए जवाहर लाल गरीब-अमीर सभी देशों के मिलकर चलने की सीख देते थे।

भारत का एक खास गुण है। भारत सारी दुनिया को एक कुटुंब, एक परिवार मानता आया है। जवाहर लाल इस बात को सारी दुनिया में फैलाना चाहते थे। भारत से किसी को भय नहीं। अगर कोई बैर रखता है तो भारत उससे बैर नहीं करता। भारत सारी दुनिया के देशों को प्रेम के सूत्र में बांधना चाहता है। इसी नीति के कारण भारत का दुनिया में आदर है। इसी कारण जवाहर लाल को सारी दुनिया याद करती है।

# 16

# शांति का दूत

जवाहर लाल नेहरू को शांति का दूत कहा जाता है। वह युद्ध को अच्छा नहीं समझते थे। दुनिया के लोगों को वह जीवन भर यही समझाते रहे।

युद्ध, लड़ाइयां, हमेशा होती आयी हैं। वह गांधी जी के चेले थे। गांधी जी अहिंसा को मानव का सबसे बड़ा गुण मानते थे। दूसरे को मारने या दबाने को हिंसा कहते हैं। इससे बचकर चलने को अहिंसा कहते हैं। अपना हक पाने के लिए भी दूसरे को मारना ठीक नहीं। ऐसा गांधी जी का संदेश था। जवाहर लाल भी ऐसा ही मानते थे। वह भी दुनिया को यही सिखाना चाहते थे।

जवाहर लाल कहते थे, "दुनिया की कहानी लड़ाइयों की कहानी नहीं। यह शांति से आगे बढ़ने की कहानी है। युद्ध से दुनिया आगे नहीं बढ़ी। मिलजुल कर काम करने से आगे बढ़ी है। युद्ध से जानें जाती हैं। माल नष्ट होता है। प्रेम की जगह घृणा ले लेती है। शांति होती है तो मेलजोल बढ़ता है। लोग एक दूसरे से सीखते हैं। जीवन में सुख-सुविधाएं बढ़ती हैं।"

शांतिदूत : जवाहर लाल ।

भारत में एक खास बात है । यहां पर शांति और अहिंसा को ऊंचा समझा जाता है । मारने वाले से बचाने वाले का अधिक आदर होता था । एक कहानी है जो बहुत लोग कहते हैं ।

एक शिकारी जंगल में शिकार खेल रहा था । उसने एक पक्षी पर तीर चलाया । तीर लगने से पक्षी गिर पड़ा । उधर एक राजकुमार जा रहा था । उसने पक्षी को गिरते देखा । दौड़ कर गया और पक्षी को उठा लिया । उसे महल में ले जाकर उसकी पट्टी की । उस पक्षी की जान बच गई ।

शिकारी ने राजा से शिकायत की, "राजकुमार ने मेरा पक्षी उठा लिया है । पक्षी मुझे मिलना चाहिए । मैंने उसे तीर मार कर गिराया है ।"

राजकुमार ने कहा, "पक्षी मरने वाला था । मैंने उसे बचाया है । उस पर मेरा हक है ।"

राजा ने दोनों की बात सुनी । फिर बोला, "मारने वाले से बचाने वाले का हक अधिक है । अहिंसा, हिंसा से बड़ी होती है । पक्षी पर राजकुमार का हक है । वह उसी के पास रहेगा ।"

गांधी जी और जवाहर लाल इस विचार को भारत का असली विचार समझते थे । यही भारत का संदेश मानते थे ।

आज दुनिया को इस संदेश की बहुत जरूरत है । पुराने समय में लड़ाई से इतनी तबाही नहीं होती थी । आजकल

तबाही बहुत होती है । जान की भी माल की भी । लड़ाई होती है तो सारी दुनिया कांप जाती है । खाने पीने की चीजें नहीं मिलतीं । एक देश से दूसरे देश जाना कठिन हो जाता है । लोग लड़ाई के मैदान में भी मरते हैं । मैदान से बाहर भी मरते हैं । जो लड़ाई में जाते हैं, वे भी मरते हैं । जो लड़ाई में नहीं जाते, वे भी मरते हैं ।

पिछले सौ सालों में दो बड़ी लड़ाइयां हुई हैं । सारी दुनिया पर इनका असर पड़ा । इसलिए इनको विश्वयुद्ध भी कहते हैं । इन लड़ाइयों का कोई एक मैदान नहीं था । सारी दुनिया ही मैदान थी । कोई कहीं भी रहता हो मारा जा सकता था । बम से, तोप से, गोली से । या फिर भूख से लो । मरते थे ।

पहली बड़ी लड़ाई सन् 1914 से 1918 तक चली । उसमें एक करोड़ तीस लाख फौजी मारे गये । इतने ही आम लोग मारे गये । दो करोड़ लोग घायल हुए । तीस लाख कैदी बने । 90 लाख बच्चे अनाथ हो गये । 50 लाख स्त्रियों के सुहाग लुट गये । एक करोड़ लोग बेघर हो गये । लड़ाई पर लगभग 11 हजार करोड़ रुपया खर्च हुंआ ।

दूसरी लड़ाई में तबाही इससे कई गुना अधिक हुई । एक ही देश के दो करोड़ लोग मारे गये । एक बार फिर ऐसी लड़ाई हो तो क्या होगा ? हो सकता है दुनिया में एक भी आदमी न बचे ।

जवाहर लाल दुनिया को इस तबाही से बचाना चाहते थे। इसलिए लड़ाई का विरोध करते थे। सारे झगड़े शांति से हल करने पर जोर देते थे। लड़ाई जिन कारणों से होती है उनको दूर करना चाहते थे।

लड़ाई के खास कारण क्या हैं? कुछ देश दूसरों की आजादी छीनना चाहते हैं। अपने को दूसरों से बड़ा मानते हैं। उनके धन को हड़पना चाहते हैं। जवाहर लाल इस सोच को बदलना चाहते थे।

उन्होंने दुनिया के सामने पांच बातें रखी :

1. सब देशों की आजादी और एकता का आदर करो।
2. एक दूसरे के घरेलू मामलों में दखल मत दो।
3. कोई देश दूसरे देश पर हमला न करे।
4. एक दूसरे को बराबर समझो और सब के लाभ की सोचो।
5. एक दूसरे से मेल बढ़ाओ। विचार अलग हों तो लड़ाई से नहीं बातचीत से मत-भेद मिटाओ।

यह बात मान ली जाय तो युद्ध से छुटकारा मिल सकता है।

यही पांच बातें "पंचशील" के नाम से दुनिया में मशहूर हुई। दुनिया की गुटबंदी आज लगभग खत्म हो गई है। इसके लिए जवाहर लाल को सदा याद रखा जायेगा।

तरंग प्रिंटर्स, लक्ष्मी नगर, दिल्ली -92 द्वारा मुद्रित।